बनाम ज्ञान

दलित ज्ञान की देशज परंपरा :

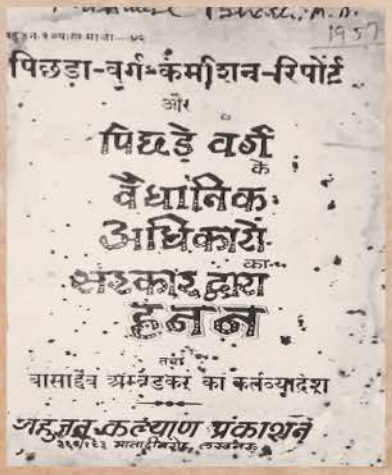

उत्तर भारत में दलित आंगिक ज्ञान की निर्मिति और आधुनिक मूल्यबोध वाया हिन्दी दलित पत्रकारिता

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

दलित ज्ञान की देशज परंपरा : उत्तर भारत में दलित आंगिक ज्ञान की निर्मिति और आधुनिक मूल्यबोध वाया हिन्दी दलित पत्रकारिता

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. के. सी. शर्मा, चित्तौड़गढ़
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 30 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–55 रुपये
60 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–85 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अजय कुमार

दलित ज्ञान की देशज परंपरा : उत्तर भारत में दलित आंगिक ज्ञान की निर्मिति और आधुनिक मूल्यबोध वाया हिन्दी दलित पत्रकारिता

यह आलेख दलित दलित आंगिक बुद्धिजीवियों और लोकज्ञानियों के जीवन और साहित्य की चर्चा के जरिये यह खोज करना चाहता है कि आधुनिक भारत में धर्म, राजनीति और राज्य जैसी संरचना को चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु और उनके समानधर्मी स्वामी अछूतानन्द, मंगुराम, पेरियार ललई सिंह यादव जैसे लोकचिन्तकों ने किस प्रकार देखा? उनके कार्यवृतों और विचारधारा को उस परिधीय समाज ने कैसे देखा और स्वीकार किया जिसके बारे में वे लगातार बात करते रहे थे? यह आलेख इस विमर्श की पड़ताल करने की कोशिश करेगा कि परिधीय समुदायों का लोक-ज्ञानियों के प्रति क्या दृष्टिकोण था? इसके माध्यम से यह भी पड़ताल की गई है कि दलित चिंतकों को डॉ. भीमराव राम जी आम्बेडकर के साहित्य ने किस प्रकार जागरुक और प्रभावित किया। साथ ही वह कौन सी प्रेरणा और उद्देश्य थे जिसके कारण चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु ने डॉ. आम्बेडकर के साहित्य को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए प्रेस की स्थापना की। यह आलेख चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु और बहुजन कल्याण प्रकाशन से जुड़े कुछ अन्य आम्बेडकरवादी साहित्य प्रचारकों के तमाम प्रयासों का लेखा-जोखा व आकलन और उनके विवरण को भी प्रस्तुत करता है। इस प्रकार वह कौन से विचार थे जो लोगों को अधिकारों के प्रति जागरुक कर रहे थे? यह आलेख यह भी बताने का प्रयास करेगा कि एक विषय के रूप में समाज विज्ञान ने परिधीय समुदायों के लोक-ज्ञानियों को क्यों नजरन्दाज कर दिया? किस तरह से इन लोकज्ञानियों की वजह से समाज विज्ञान का लेखन आज 21वीं सदीं में उसे रेखांकित करने को मजबूर हुआ है? जिन्हें समाज, साहित्य, राजनीति व अकादमियाँ में अब तक ठीक से जगह नहीं मिली थी। प्रस्तुत आलेख में इन सब प्रश्नों को विस्तारपूर्वक आगे बढ़ाया गया है। इस आलेख को दो भागों में तैयार किया गया है पहला इसमें डॉ. आम्बेडकर की पत्रकारिता और मूकनायक अखबार की 100वीं वर्षगाँठ के बहाने से उत्तर भारत की दलित पत्रकारिता की पड़ताल करने की कोशिश की गई है। इसलिए इस आलेख का प्रस्थान बिंदु भी दलित पत्रकारिता ही है। दूसरा इसमें उस दलित पत्रकारिता की पड़ताल भी की गई है जिसने उत्तर भारत में एक संस्थानीकरण का रूप लिया है।

दलित पत्रकारिता : परिचय

डॉ. आम्बेडकर एक सफल पत्रकार एवं प्रभावी संपादक थे। अखबारों के माध्यम से समाज में उन्नति होगी, इस पर उन्हें विश्वास था। वह आन्दोलन में अखबार को बेहद महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने शोषित एवं दलित समाज में जागृति लाने के लिए अनेक पत्रों एवं पाँच पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। इनसे उनके दलित आंदोलन को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण मदद मिली।[1] उन्होंने कहा है कि, ''किसी भी आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अखबार की आवश्यकता होती है, अगर आन्दोलन का कोई अखबार नहीं है तो उस आन्दोलन की हालत पंख टूटे हुए पंछी की तरह होती हैं।'' डॉ. आम्बेडकर ही दलित पत्रकारिता के आधार स्तम्भ हैं क्योंकि वे दलित पत्रिकारिता के प्रथम संपादक, संस्थापक एवं प्रकाशक हैं।[2] डॉ. आम्बेडकर ने सभी पत्र मराठी भाषा में ही प्रकाशित किए क्योंकि उनका कार्य क्षेत्र महाराष्ट्र था और मराठी वहाँ की जन भाषा है और उस समय महाराष्ट्र की शोषित एवं दलित जनता ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी, वह केवल मराठी ही समझ पाती थी। कई दशकों तक उन्होंने पाँच